सोयाबीन की खेती की कृषि कार्यमाला
किस्म – करिश्मा–999

क्रमांक	कार्यविधियां	कार्यविधियों का वर्णन
1	जलवायु	सोयाबीन की खेती वर्षा वाले जलवायु क्षेत्र में की जाती है। सोयाबीन के लिए गर्म वातावरण और अच्छी धूप की आवश्यकता होती है। पौधे की बढ़वार के समय तापमान 25–30°C उपयुक्त होता है।
2	भूमि की तैयारी	ग्रीष्मकालीन में 2–3 बार गहरी जुताई करने के बाद पाटा चलाकर मिट्टी को भुरभुरी और खेत को समतल कर लें। जुताई पश्चात 15–20 दिन के लिए खेत को खाली छोड़ दें, जिससे जमीन के नीचे पाये जाने वाले कीट एवं भूमी जनित बीमारियां नष्ट हो सकें।
3	बोआई का समय	15 जुन से 15 जुलाई तक का समय उपयुक्त हैं।
4	बीज उपचार	थायरम दवा 2.5 से 3.0 ग्राम प्रति किलो बीज बोने के पूर्व मिलाकर तत्पश्चात बोआई करें।
5	बीज दर	**करिश्मा–999** किस्म का बीज 25 किलो प्रति एकड़ के हिसाब से उपयुक्त रहता है।
6	पौधें से पौधें की दूरी	5–7 से सेन्टीमीटर होना चाहिए।
7	कतार से कतार की दूरी	45 सेन्टीमीटर होना चाहिए।
8	उर्वरक प्रबंधन	खाद की मात्रा मिट्टी परीक्षण के आधार पर तय करें एवं सामान्यतः NPK क्रमशः 10:25:10 एवं गंधक 8 किलो ग्राम प्रति एकड की दर से देना चाहीऐं।
9	सिंचाई	सोयाबीन वर्षा आधारित खरीफ फसल है। इसलिए इसमें अलग सें सिंचाई की आवश्यकता नही पड़ती है।
10	खरपतवार नियंत्रण	अपने निकटतम कृषि विशेषज्ञ से परामर्श लेकर उपयुक्त रासायनिक खरपतवारों का छिडकाव करें।
11	कीट एवं रोग नियंत्रण	**करिश्मा–999** किस्म रस्ट एवं अन्य बीमारियों के प्रति सहनशील है फिर भी अन्य कीट एवं रोग दिखने अवस्था में अपने निकटतम कृषि विशेषज्ञ से सलाह लेकर दवा का छिड़काव करें।
12	फसल की कटाई	फसल की कटाई तब करना चाहिए जब 95 प्रतिशत फलियां भूरी हो जाए एवं पत्तियां झड़ जाऐं उसके बाद ही कटाई शुरू करें।
13	विशेष सुझाव	सोयाबीन बीज की बुआई 3–4 इंच वर्षा हो जाने के बाद ही करें एवं खेत में जल निकास की उचित व्यवस्था करें।

विगर बायोटेक प्राइवेट लिमिटेड

ग्राम–तराना, तहसील–सॉवेर, जिला–इन्दौर (म.प्र.)